



# JYOTI RADITYA GOUTAM

19 Feb 2002

11:44 AM

Bhagalpur

Model: Web-MyKundli

Order No: 121111201

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

लिंग \_\_\_\_\_: पुल्लिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 19/02/2002  
दिन \_\_\_\_\_: मंगलवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 11:44:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 13:44:33 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Bhagalpur  
राज्य \_\_\_\_\_: Bihar  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 25:14:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 86:59:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: 00:17:56 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 12:01:56 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: -00:13:54 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 21:58:03 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 06:14:10 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 17:38:00 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 11:23:50 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: उत्तरायण  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: दक्षिण  
ऋतु \_\_\_\_\_: वसन्त  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 06:32:18 कुम्भ  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 18:13:55 वृष

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: वृष - शुक्र  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: मेष - मंगल  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: भरणी - 3  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: शुक्र  
योग \_\_\_\_\_: ब्रह्म  
करण \_\_\_\_\_: गर  
गण \_\_\_\_\_: मनुष्य  
योनि \_\_\_\_\_: गज  
नाड़ी \_\_\_\_\_: मध्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: क्षत्रिय  
वश्य \_\_\_\_\_: चतुष्पाद  
वर्ग \_\_\_\_\_: मृग  
युँजा \_\_\_\_\_: पूर्व  
हंसक \_\_\_\_\_: अग्नि  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: ले-लेखपाल  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: लौह - स्वर्ण  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: मीन

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1923	माघ	30
पंजाबी	संवत : 2058	फाल्गुन	8
बंगाली	सन् : 1408	फाल्गुन	6
तमिल	संवत : 2058	मासी	7
केरल	कोल्लम : 1177	कुंभम	7
नेपाली	संवत : 2058	फाल्गुन	7
चैत्रादि	संवत : 2058	माघ	शुक्ल 7
कार्तिकादि	संवत : 2058	माघ	शुक्ल 7

### पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 7  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 29:00:16  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 7  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : भरणी  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 20:05:16 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : भरणी  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : ब्रह्म  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 19:41:12 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : ब्रह्म  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : गर  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 16:18:40 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : गर  
भयात \_\_\_\_\_ : 44:42:27  
भभोग \_\_\_\_\_ : 65:35:37  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : शुक्र 6 वर्ष 4 मा 28 दि

### घात चक्र

मास \_\_\_\_\_ : कार्तिक  
तिथि \_\_\_\_\_ : 1-6-11  
दिन \_\_\_\_\_ : रविवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : मघा  
योग \_\_\_\_\_ : विष्कुम्भ  
करण \_\_\_\_\_ : बव  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 1  
वर्ग \_\_\_\_\_ : सिंह  
लग्न \_\_\_\_\_ : मेष  
सूर्य \_\_\_\_\_ : कर्क  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : मेष  
मंगल \_\_\_\_\_ : सिंह  
बुध \_\_\_\_\_ : वृष  
गुरु \_\_\_\_\_ : कन्या  
शुक्र \_\_\_\_\_ : तुला  
शनि \_\_\_\_\_ : मिथुन  
राहु \_\_\_\_\_ : वृश्चिक

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

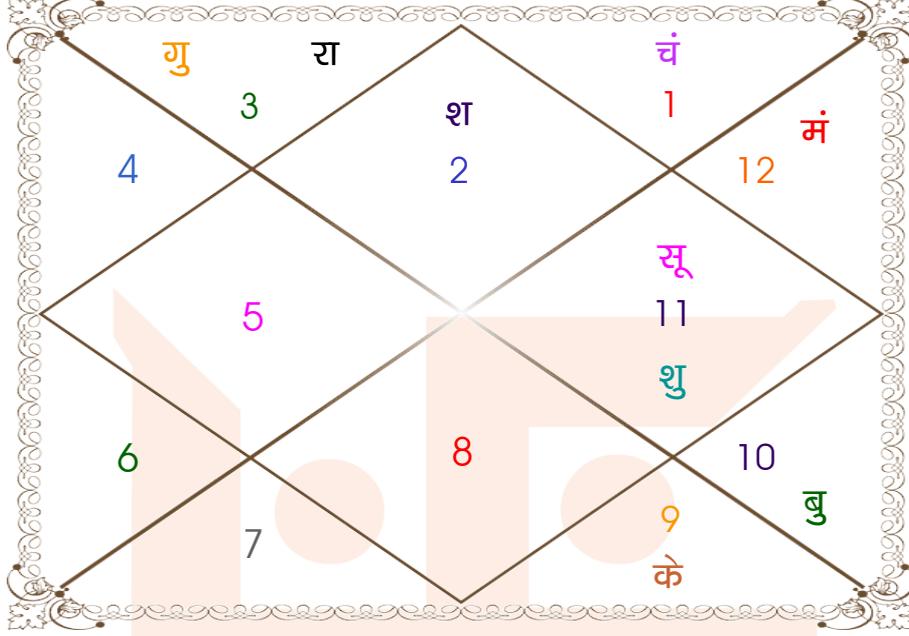
लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

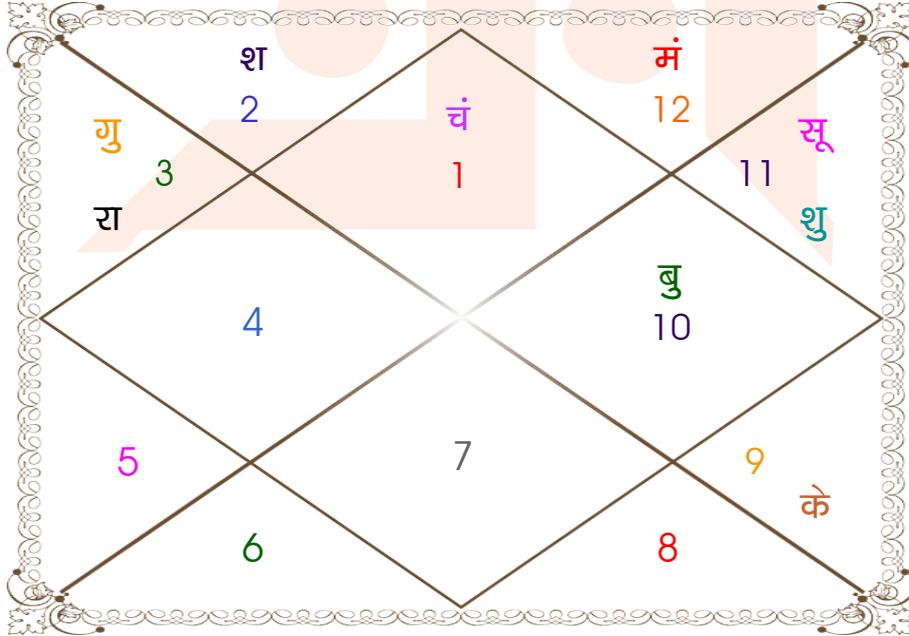
9835195382

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

# लग्न कुण्डली और दशा

## लग्न कुण्डली

मं	चं	शल	गुरा
शुसू			
बु			
के			

## लग्न कुण्डली

शल	चं	मं	शुसू
रागु			
			बु
			के

विंशोत्तरी  
शुक्र 6वर्ष 4मा 28दि  
शुक्र

19/02/2002

20/07/2108

शुक्र	19/07/2008
सूर्य	19/07/2014
चन्द्र	19/07/2024
मंगल	20/07/2031
राहु	19/07/2049
गुरु	19/07/2065
शनि	19/07/2084
बुध	20/07/2101
केतु	20/07/2108

योगिनी  
भद्रिका 1वर्ष 7मा 7दि  
पिंगला

27/09/2025

27/09/2027

पिंगला	07/11/2025
धान्या	06/01/2026
भामरी	29/03/2026
भद्रिका	08/07/2026
उल्का	07/11/2026
सिद्धा	29/03/2027
संकटा	07/09/2027
मंगला	27/09/2027

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

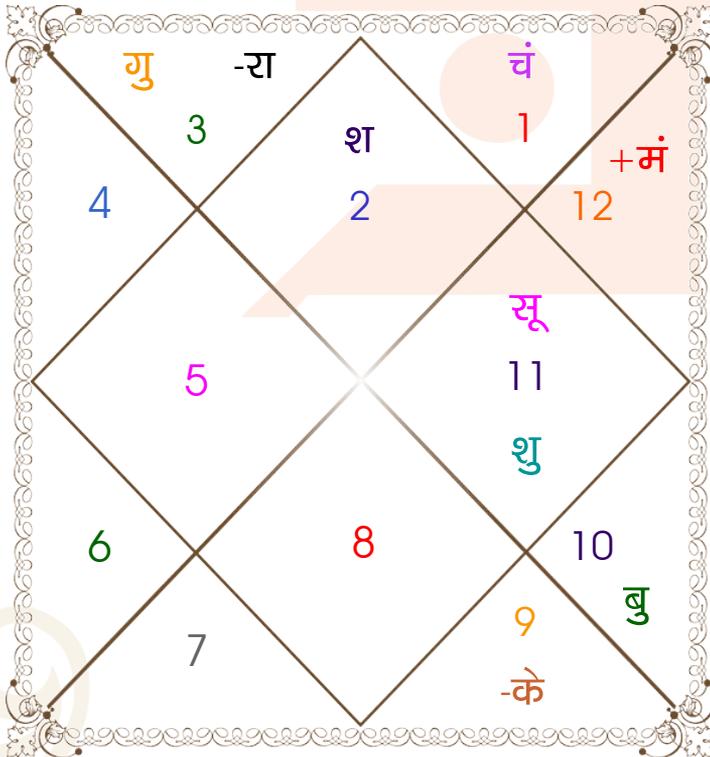
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न		वृष	18:13:55	361:42:27	रोहिणी	3	4	शुक्र	चंद्र	बुध	---
सूर्य		कुंभ	06:32:18	01:00:31	धनिष्ठा	4	23	शनि	मंगल	चंद्र	शत्रु राशि
चंद्र		मेष	22:23:32	12:14:14	भरणी	3	2	मंगल	शुक्र	शनि	सम राशि
मंगल		मीन	28:44:05	00:42:54	रेवती	4	27	गुरु	बुध	शनि	मित्र राशि
बुध		मक	10:05:20	00:53:23	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	चंद्र	सम राशि
गुरु	व	मिथु	11:55:07	00:02:03	आर्द्रा	2	6	बुध	राहु	शनि	शत्रु राशि
शुक्र		कुंभ	15:08:22	01:15:03	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	केतु	मित्र राशि
शनि		वृष	14:16:02	00:01:16	रोहिणी	2	4	शुक्र	चंद्र	गुरु	मित्र राशि
राहु	व	मिथु	00:38:28	00:01:45	मृगशिरा	3	5	बुध	मंगल	बुध	उच्च राशि
केतु	व	धनु	00:38:28	00:01:45	मूल	1	19	गुरु	केतु	केतु	उच्च राशि
हर्ष		कुंभ	01:15:27	00:03:28	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	बुध	---
नेप		मक	15:23:17	00:02:09	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	गुरु	---
प्लूटो		वृश्चि	23:30:14	00:00:59	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	मंगल	---
दशम भाव		कुंभ	03:25:21	--	धनिष्ठा	--	23	शनि	मंगल	शुक्र	--

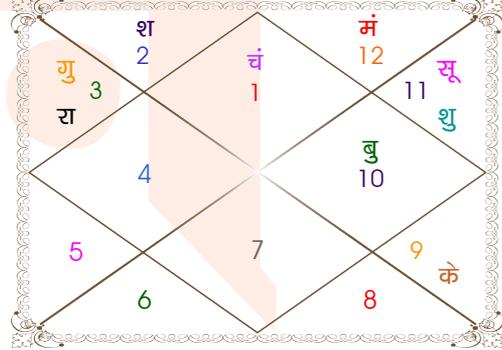
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:52:57

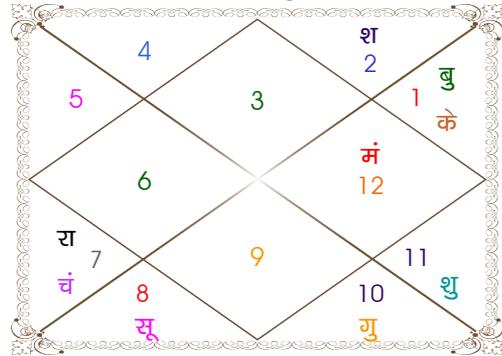
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	वृष 00:45:49	वृष 18:13:55
2	मिथुन 00:45:49	मिथुन 13:17:44
3	मिथुन 25:49:38	कर्क 08:21:32
4	कर्क 20:53:27	सिंह 03:25:21
5	सिंह 20:53:27	कन्या 08:21:32
6	कन्या 25:49:38	तुला 13:17:44
7	वृश्चिक 00:45:49	वृश्चिक 18:13:55
8	धनु 00:45:49	धनु 13:17:44
9	धनु 25:49:38	मकर 08:21:32
10	मकर 20:53:27	कुम्भ 03:25:21
11	कुम्भ 20:53:27	मीन 08:21:32
12	मीन 25:49:38	मेष 13:17:44

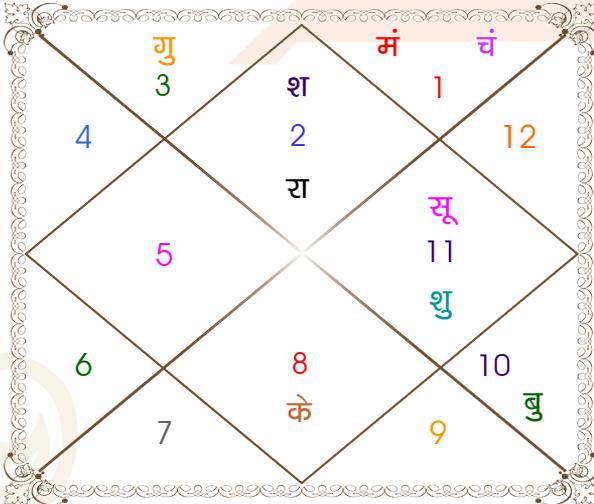
### निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृष	18:13:55
2	मिथुन	12:49:25
3	कर्क	06:42:54
4	सिंह	03:25:21
5	कन्या	05:32:25
6	तुला	12:18:07
7	वृश्चिक	18:13:55
8	धनु	12:49:25
9	मकर	06:42:54
10	कुम्भ	03:25:21
11	मीन	05:32:25
12	मेष	12:18:07

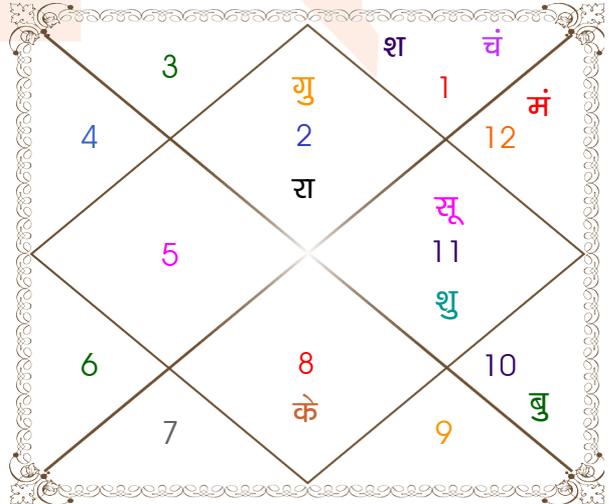
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उभाद्रपद	रेवती	अश्विनी

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 6 वर्ष 4 मास 28 दिन

शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष
19/02/2002	19/07/2008	19/07/2014	19/07/2024	20/07/2031
19/07/2008	19/07/2014	19/07/2024	20/07/2031	19/07/2049
00/00/0000	सूर्य 05/11/2008	चंद्र 20/05/2015	मंगल 15/12/2024	राहु 01/04/2034
00/00/0000	चंद्र 07/05/2009	मंगल 19/12/2015	राहु 03/01/2026	गुरु 24/08/2036
00/00/0000	मंगल 12/09/2009	राहु 19/06/2017	गुरु 09/12/2026	शनि 01/07/2039
00/00/0000	राहु 07/08/2010	गुरु 19/10/2018	शनि 18/01/2028	बुध 18/01/2042
00/00/0000	गुरु 26/05/2011	शनि 19/05/2020	बुध 14/01/2029	केतु 05/02/2043
19/02/2002	शनि 07/05/2012	बुध 18/10/2021	केतु 13/06/2029	शुक्र 05/02/2046
शनि 19/07/2004	बुध 13/03/2013	केतु 20/05/2022	शुक्र 13/08/2030	सूर्य 31/12/2046
बुध 20/05/2007	केतु 19/07/2013	शुक्र 18/01/2024	सूर्य 19/12/2030	चंद्र 01/07/2048
केतु 19/07/2008	शुक्र 19/07/2014	सूर्य 19/07/2024	चंद्र 20/07/2031	मंगल 19/07/2049

गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष
19/07/2049	19/07/2065	19/07/2084	20/07/2101	20/07/2108
19/07/2065	19/07/2084	20/07/2101	20/07/2108	00/00/0000
गुरु 06/09/2051	शनि 22/07/2068	बुध 16/12/2086	केतु 16/12/2101	शुक्र 19/11/2111
शनि 20/03/2054	बुध 01/04/2071	केतु 13/12/2087	शुक्र 15/02/2103	सूर्य 19/11/2112
बुध 25/06/2056	केतु 10/05/2072	शुक्र 13/10/2090	सूर्य 23/06/2103	चंद्र 20/07/2114
केतु 31/05/2057	शुक्र 11/07/2075	सूर्य 19/08/2091	चंद्र 22/01/2104	मंगल 20/09/2115
शुक्र 30/01/2060	सूर्य 21/06/2076	चंद्र 18/01/2093	मंगल 19/06/2104	राहु 19/09/2118
सूर्य 18/11/2060	चंद्र 21/01/2078	मंगल 15/01/2094	राहु 08/07/2105	गुरु 20/05/2121
चंद्र 20/03/2062	मंगल 02/03/2079	राहु 03/08/2096	गुरु 14/06/2106	शनि 20/02/2122
मंगल 24/02/2063	राहु 06/01/2082	गुरु 09/11/2098	शनि 24/07/2107	00/00/0000
राहु 19/07/2065	गुरु 19/07/2084	शनि 20/07/2101	बुध 20/07/2108	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 6 वर्ष 4 मा 13 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

<b>मंगल - गुरु</b> 03/01/2026 09/12/2026	<b>मंगल - शनि</b> 09/12/2026 18/01/2028	<b>मंगल - बुध</b> 18/01/2028 14/01/2029	<b>मंगल - केतु</b> 14/01/2029 13/06/2029	<b>मंगल - शुक्र</b> 13/06/2029 13/08/2030
गुरु 17/02/2026 शनि 12/04/2026 बुध 30/05/2026 केतु 19/06/2026 शुक्र 15/08/2026 सूर्य 01/09/2026 चंद्र 29/09/2026 मंगल 19/10/2026 राहु 09/12/2026	शनि 12/02/2027 बुध 10/04/2027 केतु 04/05/2027 शुक्र 10/07/2027 सूर्य 30/07/2027 चंद्र 02/09/2027 मंगल 26/09/2027 राहु 25/11/2027 गुरु 18/01/2028	बुध 10/03/2028 केतु 31/03/2028 शुक्र 30/05/2028 सूर्य 17/06/2028 चंद्र 17/07/2028 मंगल 07/08/2028 राहु 01/10/2028 गुरु 18/11/2028 शनि 14/01/2029	केतु 23/01/2029 शुक्र 17/02/2029 सूर्य 24/02/2029 चंद्र 09/03/2029 मंगल 18/03/2029 राहु 09/04/2029 गुरु 29/04/2029 शनि 22/05/2029 बुध 13/06/2029	शुक्र 23/08/2029 सूर्य 13/09/2029 चंद्र 18/10/2029 मंगल 12/11/2029 राहु 15/01/2030 गुरु 13/03/2030 शनि 20/05/2030 बुध 19/07/2030 केतु 13/08/2030
<b>मंगल - सूर्य</b> 13/08/2030 19/12/2030	<b>मंगल - चंद्र</b> 19/12/2030 20/07/2031	<b>राहु - राहु</b> 20/07/2031 01/04/2034	<b>राहु - गुरु</b> 01/04/2034 24/08/2036	<b>राहु - शनि</b> 24/08/2036 01/07/2039
सूर्य 19/08/2030 चंद्र 30/08/2030 मंगल 06/09/2030 राहु 25/09/2030 गुरु 12/10/2030 शनि 02/11/2030 बुध 20/11/2030 केतु 27/11/2030 शुक्र 19/12/2030	चंद्र 05/01/2031 मंगल 18/01/2031 राहु 19/02/2031 गुरु 19/03/2031 शनि 22/04/2031 बुध 22/05/2031 केतु 03/06/2031 शुक्र 09/07/2031 सूर्य 20/07/2031	राहु 15/12/2031 गुरु 24/04/2032 शनि 27/09/2032 बुध 14/02/2033 केतु 12/04/2033 शुक्र 24/09/2033 सूर्य 12/11/2033 चंद्र 02/02/2034 मंगल 01/04/2034	गुरु 27/07/2034 शनि 12/12/2034 बुध 16/04/2035 केतु 06/06/2035 शुक्र 30/10/2035 सूर्य 13/12/2035 चंद्र 24/02/2036 मंगल 15/04/2036 राहु 24/08/2036	शनि 05/02/2037 बुध 03/07/2037 केतु 01/09/2037 शुक्र 22/02/2038 सूर्य 15/04/2038 चंद्र 11/07/2038 मंगल 09/09/2038 राहु 13/02/2039 गुरु 01/07/2039
<b>राहु - बुध</b> 01/07/2039 18/01/2042	<b>राहु - केतु</b> 18/01/2042 05/02/2043	<b>राहु - शुक्र</b> 05/02/2043 05/02/2046	<b>राहु - सूर्य</b> 05/02/2046 31/12/2046	<b>राहु - चंद्र</b> 31/12/2046 01/07/2048
बुध 10/11/2039 केतु 04/01/2040 शुक्र 07/06/2040 सूर्य 23/07/2040 चंद्र 09/10/2040 मंगल 02/12/2040 राहु 21/04/2041 गुरु 23/08/2041 शनि 18/01/2042	केतु 09/02/2042 शुक्र 14/04/2042 सूर्य 03/05/2042 चंद्र 04/06/2042 मंगल 27/06/2042 राहु 23/08/2042 गुरु 13/10/2042 शनि 13/12/2042 बुध 05/02/2043	शुक्र 07/08/2043 सूर्य 01/10/2043 चंद्र 31/12/2043 मंगल 04/03/2044 राहु 15/08/2044 गुरु 08/01/2045 शनि 01/07/2045 बुध 03/12/2045 केतु 05/02/2046	सूर्य 21/02/2046 चंद्र 21/03/2046 मंगल 09/04/2046 राहु 28/05/2046 गुरु 11/07/2046 शनि 01/09/2046 बुध 18/10/2046 केतु 06/11/2046 शुक्र 31/12/2046	चंद्र 14/02/2047 मंगल 18/03/2047 राहु 09/06/2047 गुरु 21/08/2047 शनि 15/11/2047 बुध 01/02/2048 केतु 04/03/2048 शुक्र 03/06/2048 सूर्य 01/07/2048

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र  
लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382  
9835195382

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	1
भाग्यांक	7
मित्र अंक	1, 4, 8, 9, 7
शत्रु अंक	3, 5, 6
शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	कर्क, धनु
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

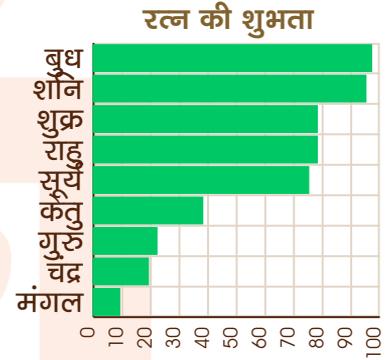
9835195382

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	97%	भाग्योदय, धन, सन्तति सुख
नीलम	शनि	95%	स्वास्थ्य, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
हीरा	शुक्र	78%	व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
गोमेद	राहु	78%	धन, भाग्योदय
माणिक्य	सूर्य	75%	व्यावसायिक उन्नति, सुख
लहसुनिया	केतु	38%	दुर्घटना, धन हानि
पुखराज	गुरु	22%	धन हानि, दुर्घटना, हानि
मोती	चंद्र	19%	व्यय, पराक्रम हानि
मूंगा	मंगल	9%	हानि, व्यय, दाम्पत्य कष्ट



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	19/07/2008	62%	0%	9%	100%	22%	91%	100%	84%	50%
सूर्य	19/07/2014	88%	31%	22%	97%	34%	66%	83%	66%	12%
चंद्र	19/07/2024	81%	44%	9%	100%	22%	78%	95%	66%	12%
मंगल	20/07/2031	81%	31%	34%	84%	34%	78%	95%	66%	50%
राहु	19/07/2049	62%	0%	0%	97%	22%	84%	100%	91%	12%
गुरु	19/07/2065	81%	31%	22%	84%	47%	66%	95%	78%	38%
शनि	19/07/2084	62%	0%	0%	100%	22%	84%	100%	84%	12%
बुध	20/07/2101	81%	0%	9%	100%	22%	84%	95%	78%	38%
केतु	20/07/2108	62%	0%	22%	97%	22%	84%	83%	66%	56%

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	19/02/2002-23/07/2002 08/01/2003-07/04/2003	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030	-----

### द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----

### तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	20/03/2084-21/05/2086 21/05/2086-08/02/2087	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	21/05/2086-21/05/2086 08/02/2087-18/07/2088 31/10/2088-05/04/2089	-----

### शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	शुभ	स्वास्थ्य
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	पराक्रम हानि
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	दाम्पत्य कलह
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	धनार्जन
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	व्यय

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपके जन्मकाल में मंगल की स्थिति चन्द्रकुंडली में द्वादश भाव में है अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। चूंकि चन्द्र से मांगलिक होने का दोष अधिक प्रबल नहीं होता। अतः इसके प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति किंचित व्ययशील रहेगी तथा शुभाशुभ कार्यों पर आप समय समय पर व्यय करते रहेंगे। जिससे आपको अल्प मात्रा में आर्थिक परेशानी हो सकती है लेकिन इसका प्रभाव अल्प रहेगा। तथा सामान्य रूप से धनार्जन होता रहेगा। शारीरिक स्वास्थ्य आपका मध्यम रहेगा। मानसिक परेशानी की अनुभूति आपको समय समय पर होती रहेगी। साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान भी उत्पन्न होंगे लेकिन उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में किंचित उग्रता का भाव हो सकता है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह में किंचित विलम्ब हो सकता है परन्तु इस कार्य में सफलता आपको अवश्य प्राप्त होगा। साथ ही विवाह पूर्व किसी वार्ता में गतिरोध भी उत्पन्न हो सकता है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। विवाह के पश्चात आपका दाम्पत्य जीवन परस्पर सामंजस्य के कारण अनुकूल रहेगा तथा इसका उचित उपभोग करने में आप समर्थ रहेंगे।

चन्द्रकुंडली में मंगल की द्वादश स्थिति के प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील होगी परन्तु प्रचुर मात्रा में धनार्जन होने के कारण इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा साथ ही सांसारिक कार्यों में उत्पन्न व्यवधानों तथा समस्याओं का सामना तथा समाधान करने में भी आप सफल होंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से भाई बहनों का सुख मध्यम रहेगा। पराक्रम तथा आत्मबल में वृद्धि होगी जिससे आपके लाभ एवं उन्नति के मार्ग हमेशा प्रशस्त रहेंगे। षष्ठ

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

भावस्थ मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रुवर्ग पर विजय प्राप्त करने में आपको सफलता मिलेगी। यदा कदा पित या गर्मी द्वारा उत्पन्न रोगों से आपको परेशानी का सामना करना पड़ेगा। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा स्वभाव में उग्रता भी रहेगी लेकिन परस्पर सामंजस्य के कारण आप सुखी दाम्पत्य जीवन का उपभोग करने में समर्थ रहेंगे।

इस प्रकार अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए। जिससे परस्पर मांगलिक दोष का प्रभाव समाप्त हो जाएगा। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु सदृश पाप ग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। ऐसा होने पर आपके सुख एवं सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आनन्द पूर्वक आप अपने दाम्पत्य जीवन का उपभोग करेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सुख एवं सहयोग भी प्रदान करेंगे।



**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाद्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाद्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

### काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में कुलिक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। परन्तु यह केवल आंशिक रूप में ही विद्यमान है। परिणामस्वरूप जातक के जीवन में समय-समय पर आर्थिक स्थिति नाजुक रहती है जिस कारण थोड़ा बहुत कष्ट जातक को सहन करना पड़ता है और अपयश का भय बना रहता है।

इस योग के कारण जातक का विद्याध्ययन सामान्य रहता है और वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी दुःखमय हो जाता है। परिवारिक सदस्यों से समय-समय पर थोड़ा बहुत मनमुटाव हो जाता है। मित्रगण समय पर धोखा एवं कष्ट पहुँचाते हैं। जीवन में आगे बढ़ने के लिए विशेष रूप से संघर्ष नहीं करना पड़ता है। सन्तान सुख में किंचित बाधा आती है। पुत्र आज्ञा का पालन करने में असमर्थ होता है। वह थोड़ा बहुत क्रूर एवं दुष्ट स्वभाव का होता है तथा मनमानी करता रहता है, जिससे जातक प्रभावित हो जाता है। सामाजिक मान-सम्मान व प्रतिष्ठा में आंशिक नुकसान होता है और जातक भूत प्रेतों से कभी कभी परेशान हो जाता है।

इस योग के कारण जातक को कभी-कभी रोग व्याधि भी घेर लेती है जिससे स्वास्थ्य असामान्य हो जाता है और मानसिक रूप से चिन्तित होना पड़ता है। जातक अपनी वृद्धावस्था को लेकर चिन्तित रहता है और वह समय आने पर कष्ट को भोगता है। जातक परोपकार की भावना से ओतप्रोत रहता है, परन्तु लोग इसका नाजायज फायदा उठाते हैं, जिससे इन्हें थोड़ा बहुत क्षति ही मिलती है। जीवन यापन मध्यम रहता है और जातक पराक्रमहीन हो जाता है। सुखभोग का आंशिक अभाव रहता है। लेकिन इतना सब कुछ होते हुए भी जातक व्यापार में मनोभिलषित (इच्छित) सफलता प्राप्त करता है और जातक के जीवन में मान-सम्मान भी मिलता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

#### विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- सूर्य पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है ।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य और शुक्र के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें । रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं ।

आपकी कुण्डली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें । 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

**नोट :**

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## ग्रह फल

### सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

कुम्भ राशि में रवि हो तो जातक स्थिरचित्त, स्वार्थी, कार्यदक्ष, क्रोधी, दुःखी, निर्धन, अच्छा ज्योतिषी एवं मध्य अवस्था के पश्चात् सन्यास लेने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

### चन्द्र

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकात्प्रिय, क्रोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।

मेष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक स्थिर सम्पत्तिवान्, शूर, दृढ़ शरीरवाला, बन्धुहीन, कामी, उतावला, जलभीरु, यात्रा करने का शौकीन, आत्माभिमानी एवं साहसी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पड़ेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत्त होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोड़कर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

## मंगल

ग्यारवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, क्रोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

मीन राशि में मंगल हो तो जातक गौरववर्ण, कामुक, आज्ञाकारी गन्दा, अस्थिर जीवन, रोगी, प्रवासी, मान्त्रीक, बन्धु-द्वेषी, नास्तिक, हठी, धूर्त और वाचाल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अर्जित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आधिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

## बुध

नवमभाव में बुध हो तो जातक विद्वान् लेखक, ज्योतिषी, धर्मभीरु, व्यवसाय प्रिय, भाग्यवान्, सम्पादक, गवैया, कवि एवं सदाचारी होता है।

मकर राशि में बुध हो तो जातक कुलहीन, दुश्शील, मिथ्याभाषी, ऋणी, मूर्ख, डरपोक, व्यापार में रुचि लेने वाला, किफायतसार, चतुर एवं परिश्रमी होता है।

## गुरु

द्वितीयभाव में गुरु हो तो जातक मधुरभाषी, सम्पत्ति और सन्ततिवान्, सुन्दरशरीर, सदाचारी, पुण्यात्मा, सुकार्यरत, लोकमान्य, राज्यमान्य, व्यवसायी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं भाग्यवान् होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान्, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

## शुक्र

दशम भाव में शुक्र हो तो जातक गुणवान्, दायालु, विलासी, ऐश्वर्यवान्, भाग्यवान्, न्यायवान् विजयी, गानप्रिय, धार्मिक ज्योतिषी एवं लोभी होता है।

कुम्भ राशि में शुक्र हो तो जातक शान्तिप्रिय, दूसरों को सहायता करने वाला, सच्चरित्र, सुन्दर, लोकप्रिय, चिन्ताशील एवं रोग से सन्तप्त होता है।

## शनि

लग्न (प्रथम) में शनि मकर, कुम्भ तथा तुला का हो तो धनाढ्य, सुखी, धनु और मीन राशियों में हो तो अत्यन्त धनवान् और सम्मानित एवं अन्य राशियों का हो तो अशुभ होता है।

वृष राशि में शनि हो तो जातक असत्य भाषी, द्रव्यहीन, मूर्ख, वचनहीन, सफल, एकान्तप्रिय, छोटी-छोटी बातों के कारण चिंतित एवं संयमी होता है।

## राहु

द्वितीय भाव में राहु हो तो जातक संहशील, अल्पधनवान्, कठोरभाषी, कुटुम्बहीन, अल्पसन्तति, मात्सर्ययुक्त एवं परदेशगामी होता है।

मिथुन राशि में राहु हो तो जातक- साहसी, दीर्घायु, साधु गाने वाला, योगाभ्यासी एवं बलवान् होता है।

## केतु

अष्टम भाव में केतु हो तो जातक दुर्बुद्धि, स्त्रीद्वेषी, चालाक, दुष्टजनसेवी, तेजहीन, नीच, स्त्री की कुण्डली में पति के लिए अशुभ एवं अल्पायु होता है।

धनु राशि में केतु हो तो जातक चंचल, धूर्त एवं मिथ्यावादी होता है।

## दशा विश्लेषण

**महादशा :- मंगल  
( 19/07/2024 - 20/07/2031 )**

मंगल की महादशा 19/07/2024 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 20/07/2031 को समाप्त होगी। आपकी जन्म कुण्डली में मंगल एकादश भाव में स्थित है। मंगल की दशा में आपको शुभ फल मिलेगा इसके पूर्व आपकी 10 वर्ष की चन्द्र दशा चल रही थी। आपको हर प्रकार का लाभ, आराम ओर सुखमय पारिवारिक जीवन मिला होगा। इस दशा के दौरान आपको सफलता और हर प्रकार का लाभ मिलेगा और आप लोकप्रिय होंगे।

**स्वास्थ्य :**

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। मंगल के कारण आपमें स्फूर्ति, जीवन शक्ति और रोग से लड़ने की क्षमता होगी। आप स्वतंत्र विचार के व्यक्ति हैं और आप अपना विरोध बरदाश्त नहीं कर सकते। इस दशा के दौरान आप अपने नेतृत्व गुणों का प्रदर्शन करेंगे। आप कृत संकल्प होंगे और आप में शक्ति व आत्मविश्वास होगा। आप दाँत और ताप से सम्बद्ध संक्रामक बीमारी से पीड़ित हो सकते हैं। इस दशा के दौरान आपको कोई बड़ी बीमारी नहीं होगी।

**अर्थ और व्यवसाय :**

जहाँ तक अर्थ का प्रश्न है, आपके लिए यह दशा अति उत्तम होगी। आपको निवेश तथा सट्टे से लाभ होगा। व्यापार-व्यवसाय से उपार्जन में वृद्धि होगी और आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आप धनसंचय करेंगे और आपकी सम्पत्तियों में वृद्धि होगी। नौकरीपेशा लोगों के कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी। आपके अधीनस्थ तथा सहकर्मी आपका सहयोग करेंगे। व्यवसाय से उपार्जन में वृद्धि होगी और आपके अधिक प्रयास किये बगैर सफलता मिलेगी। हर प्रकार का लाभ मिल सकता है। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी। संगठन में परिवर्तन हो सकता है जो अन्ततः लाभदायक सिद्ध होगा। जीविका के लिए सैन्य सेवा, सर्जरी, दवा के क्षेत्र, लोहा-इस्पात उद्योग से सम्बद्ध, व्यवसाय आदि का चयन कर सकते हैं। योजना और प्रशासन से सम्बद्ध कार्य में आप अच्छा करेंगे। आप रसायन, समुद्री उत्पाद या कुटीर उद्योग का चयन कर सकते हैं। आप एक सफल दन्तचिकित्सक या सर्जन हो सकते हैं या आपका तकनीकी या कृषि जीवन सफल होगा।

**वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :**

मंगल और बुध की अन्तर्दशा के दौरान आपको वाहन-सुख मिलेगा। सूर्य की अन्तर्दशा में आपकी यात्राएं होंगी। शनि तथा शुक्र की अन्तर्दशा में आपकी लम्बी यात्राएं हो सकती हैं। इस दशा में आपको जमीन जायदाद और अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपको कुछ पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति भी हो सकती है।

**शिक्षा :**

इस दशा के दौरान आपकी तकनीकी शिक्षा उत्तम होगी। आप परीक्षाओं तथा

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

प्रतियोगिताओं में सफल होंगे। तकनीकी विषय, गणित, विधि, इन्जीनियरिंग या चिकित्सा के विषय आपके लिये उपयुक्त होंगे। खेल तथा अन्य बाहरी गतिविधियों में आपकी रुचि होगी। आप कार्यक्रमों के आयोजन में अग्रणी होंगे तथा अपने नेतृत्व के गुणों का प्रदर्शन करेंगे।

परिवार :

परिवार में आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपके बच्चे बहुत अच्छे करेंगे और उन्हें यश, ख्याति तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके जीवन साथी के लिए समय भाग्यशाली होगा और उनकी आय, सम्पत्ति तथा जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। आपके जीवनसाथी के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपकी माता को कुछ स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। उन्हें सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, उनकी छोटी यात्राएँ होंगी और सम्बन्धियों से लाभ प्राप्त होगा। आपके छोटे भाई-बहनों को समृद्धि मिलेगी, उनकी लम्बी यात्राएँ होंगी और पिता से लाभ प्राप्त होगा। आपके बड़े भाई-बहनों की परियोजनाएं सफल होंगी, उन्हें यश और ख्याति की प्राप्ति होगी और उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके भाई-बहनों के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आप के मित्रों की संख्या विशाल होगी जो आपकी बहुत सहायता करेंगे। आपको थोड़े प्रयास से ही सफलता मिलेगी और अनेक मनोकामनाएं पूरी होंगी।

अन्तर्दशा :

मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा आपके लिये शुभ होगी, आपकी आय तथा सम्पत्ति में वृद्धि होगी और आपका निवेश सफल होगा। आगे राहु की अन्तर्दशा आपके लिए कुछ समस्याएं खड़ी कर सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको साझेदारी में कुछ लाभ तथा जीवन वृत्ति में उन्नति होगी। शनि की अन्तर्दशा कुछ मिश्रित फल देगी और आपके कार्य में परिवर्तन होगा और यात्रा तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। लग्नेश बुध के कारण आपको यश, ख्याति, सफलता तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। केतु कुछ मानसिक तनाव दे सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको बच्चों से सुख मिलेगा तथा निवेश सफल रहेगा। सूर्य के कारण आपकी छोटी यात्राएँ हो सकती हैं तथा भाइयों से सुख मिल सकता है। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको हर प्रकार का लाभ मिल सकता है, आपका पारिवारिक जीवन उत्तम रहेगा।

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

**अंतर्दशा :- मंगल - राहु  
( 15/12/2024 - 03/01/2026 )**

आपके लिए मंगल की महादशा 19/07/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 15/12/2024 को प्रारंभ होकर 03/01/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आप साहसी होंगे और शीघ्रता से फैसले करेंगे। इससे शत्रु बढ़ सकते हैं लेकिन आप उन पर विजयी होंगे। जीवनसाथी से धन प्राप्त हो सकता है। साझेदार या जीवनसाथी के माध्यम से भी आय होगी। कटुवचन से परिवार की या व्यापार की शांति भंग हो सकती है।

आपके जीवनसाथी के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है, व्याधि हो सकती है। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और स्पर्धियों पर विजयी रहेंगे। आपकी माता के सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। आपके भाई-बहनों की यात्राएं हो सकती हैं, उनके खर्चे बढ़ेंगे, गुप्त शत्रु परास्त होंगे, अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं, निवास में परिवर्तन हो सकता है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर से सेवारत हैं तो तरक्की करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चपद प्राप्त करेंगे। परामर्शदाता धनार्जन करेंगे जबकि व्यापारियों के जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन और लाभ का संकेत है।

आपको खानपान का ख्याल रखना चाहिए। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। चेहरे या मुख की मामूली व्याधि हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए राहु गायत्री मंत्र का जाप करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - गुरु  
( 03/01/2026 - 09/12/2026 )**

आपकी मंगल की महादशा 19/07/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 03/01/2026 को प्रारंभ होकर 09/12/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

इस अवधि में आप भाग्यशाली और प्रसन्न रहेंगे। खूब धन कमाएंगे। परिवार में सुख, उत्तम भोजन और वस्त्र उपलब्ध रहेंगे। आपकी मधुर वाणी से जनता प्रभावित होगी। विरासत या उपहार से धन मिल सकता है। प्रतिस्पर्धियों पर विजय मिलेगी।

नौकरी मिल सकती है। अदालत में सफलता मिलेगी। प्रोन्नति और कार्य में प्रगति का संकेत है। विशिष्ट व्यक्तियों से मित्रता बढ़ेगी।

आपके जीवनसाथी को अचानक अप्रत्याशित लाभ या परिवर्तन का संकेत है। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। माता सफल और धनी होंगी। आपके भाई-बहनों के

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

लिए यात्रा, शत्रुओं पर विजय, अचल संपत्ति के क्रय, वांछित स्थान पर तबादले का योग है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी, सम्मान में वृद्धि होगी, व्यापार में लाभ होगा, प्रोन्नति मिल सकती है।

अगर आप सेवारत हैं तो सम्मान और प्रोन्नति का संकेत है। परामर्शदाता सफल और धनी बनेंगे। व्यापारियों को अचानक धन या अचल संपत्ति का लाभ हो सकता है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। चेहरे और मुख की मामूली व्याधि संभव है। उत्तम भोजन के सेवन में अति न करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए ब्रह्माजी की उपासना करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - शनि**  
**( 09/12/2026 - 18/01/2028 )**

आपके लिए मंगल की महादशा 19/07/2024 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह 09/12/2026 को प्रारंभ होकर 18/01/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में प्रोन्नति हो सकती है, सम्मान मिलेगा। व्यापार में लाभ होगा। विवाह हो सकता है। विदेश यात्रा संभव है। जिम्मेदारी बढ़ सकती है। समृद्धि बढ़ेगी। कार्यों में सफलता मिलेगी, उच्च पद प्राप्त होगा। गंभीर अध्ययन में व्यस्त रह सकते हैं। लेखन या शोध में मन लग सकता है।

आपके जीवनसाथी व्यापार में प्रगति करेंगे। आपके पिता जायदाद क्रय कर सकते हैं, उनकी प्रोन्नति होगी, सर्जनात्मक कार्य करेंगे। माता की समृद्धि में वृद्धि होगी। आपके भाई-बहन सफल होंगे, वे बुद्धिमानी से निवेश करेंगे और उनके प्रभावशाली मित्र होंगे।

आपकी संतान शिक्षा में परिश्रम करेगी; उन्हें उच्चशिक्षा में प्रवेश मिल सकता है। अगर वे सेवारत हैं तो प्रसिद्धि और वांछित स्थान पर तबादले का योग है।

अगर आप सेवारत हैं तो अवांछित स्थान पर तबादला हो सकता है। परामर्शदाता और व्यापारी धनी बनेंगे।

स्वास्थ्य सामान्यतः अच्छा रहेगा मगर सुस्ती और निराशा से बचें। अरिष्ट से बचाव के लिए शनि महाराज की स्तुति करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - बुध**  
**( 18/01/2028 - 14/01/2029 )**

आपके लिए मंगल की महादशा 19/07/2024 को प्रारंभ हुई थी। इसमें पांचवी अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 18/01/2028 को प्रारंभ होकर 14/01/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, शिक्षा और सम्मान का

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

कारक है।

इस अवधि में आपकी लंबी यात्रा हो सकती है। प्रकाशन कार्य के लिए समय शुभ है। पत्रलेखन से लाभ होगा। उच्च शिक्षा के अवसर मिलेंगे। बहुत से मित्र होंगे। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में दिलचस्पी बढ़ेगी। शिक्षा, विज्ञान या धर्म से संबंधित यात्रा हो सकती है। भाई-बहनों से संबंध उत्तम रहेंगे। धन कमा सकते हैं। जनसंपर्क से लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी विचारों की उत्तम प्रस्तुति द्वारा या कमीशन कार्य से धन कमा सकते हैं। आपके पिता समृद्ध और प्रसन्न होंगे। माता समाजकार्य में रुचि लेंगी। भाई-बहनों को भागीदारी, व्यापार, विवाह से लाभ हो सकता है। उनके प्रभावशाली मित्र होंगे, आकांक्षाएं पूर्ण होंगी।

आपकी संतान को उच्चशिक्षा में सफलता मिलेगी, भाग्य उत्तम रहेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो साख में वृद्धि होगी, कार्य में प्रगति करेंगे। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे, यात्राएं होंगी। व्यापारियों को यात्रा और व्यापार से लाभ होगा।

स्नायविक थकान और पैरों की व्याधि से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए मूंग की दाल दान में दें।

**अंतर्दशा :- मंगल - केतु  
( 14/01/2029 - 13/06/2029 )**

आपके लिए मंगल की महादशा 19/07/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 14/01/2029 को प्रारंभ होकर 13/06/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु नाना और मोक्ष का कारक है।

इस अवधि में धन का संचय हो सकता है। जीवनसाथी के माध्यम से धन का लाभ होगा। आपकी अंतर्ज्ञान शक्ति उत्तम है। अध्यात्म में रुचि लेंगे। विरासत, वसीयत, उपहार आदि से धनागम हो सकता है। कटु वचन न बोलें, अन्यथा परिवार की शांति भंग हो सकती है। स्वास्थ्यवर्धक, शुद्ध भोजन ही ग्रहण करें। दूसरों पर निर्भरता में कमी करें।

आपके जीवनसाथी के धन का संचय होगा; जीवन में खुशियां मिलेंगी। आपके पिता के खर्चे बढ़ सकते हैं। माता को निवेश से लाभ होगा। आपके भाई-बहन समस्याओं के समाधान में दृढ़संकल्प का परिचय देंगे; उनके परिवारजनों से उत्तम संबंध होंगे, कार्यक्षेत्र में तरक्की करेंगे।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम रहेगी; माता से संबंध उत्तम रहेंगे। अगर वे सेवारत हैं तो अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं; उनका घरेलू जीवन सुखी रहेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो सफलता पाने के लिए परिश्रम करेंगे; संचार माध्यम से लाभ हो सकता है। परामर्शदाता और व्यापारी धन कमाएंगे।

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

मामूली व्याधियों को अनदेखा न करें। घाव, चोट आदि का ठीक से इलाज करवाएं। अरिष्ट से बचाव के लिए कुत्तों को भोजन दें।

**अंतर्दशा :- मंगल - शुक्र  
( 13/06/2029 - 13/08/2030 )**

आपके लिए मंगल की महादशा 19/07/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अन्तर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 13/06/2029 को प्रारंभ होकर 13/08/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, कला और नफासत का कारक है।

इस अवधि में आप लोकप्रिय और सफल होंगे। प्रसिद्धि, धन और सम्मान प्राप्त करेंगे। जीवन सुखी रहेगा। तीर्थयात्रा हो सकती है। प्रतियोगिता में सफल होंगे। सुमित्रों से लाभ होगा। कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। वाहनसुख हो सकता है। घरेलू सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। सुखकारी यात्राएं हो सकती हैं।

आपके जीवनसाथी को धन और घरेलू सुख नसीब होंगे।

आपके पिता का समय सुख से कटेगा। माता का घरेलू जीवन सुखी रहेगा। भाई-बहनों के अप्रत्याशित, सुखकारी परिवर्तन हो सकते हैं; वे धनी बनेंगे, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, यात्राएं होंगी, शुभ कार्यों पर धन खर्च होगा। आपकी संतान का स्वास्थ्य उत्तम होगा, शत्रुओं पर विजय होगी, परीक्षा में सफल होंगे। अगर वे सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं के आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। व्यापारियों को निवेश से उत्तम लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। शरीर के निचले अंगों में मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के मंत्र का जाप करें।

ॐ शुं शुक्राय नमः

**अंतर्दशा :- मंगल - सूर्य  
( 13/08/2030 - 19/12/2030 )**

आपकी मंगल की महादशा 19/07/2024 को प्रारंभ हो रही है। मंगल महादशा के अंतर्गत सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन है। आपके लिए सूर्य की अंतर्दशा 13/08/2030 को प्रारंभ होकर 19/12/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, स्वास्थ्य और ऊर्जा का कारक है।

इस अवधि में आप साहसी होंगे, साख उत्तम रहेगी। लोकप्रियता और प्रसिद्धि बढ़ेगी। उच्चपद प्राप्त होगा, कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। प्रतिस्पर्धियों और शत्रुओं पर विजयी होंगे। धन प्राप्त होगा। घरेलू सुख, भूमि-भवन आदि क्रय का योग है। पैतृक संपत्ति भी प्राप्त हो सकती है।

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**  
लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382  
9835195382

जीवनसाथी को अचल संपत्ति प्राप्त हो सकती है, धन का निवेश कर सकते हैं, कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। आपके पिता को सरकार से लाभ होगा। माता को व्यापार और यात्रा से लाभ होगा। भाई-बहनों को अप्रत्याशित लाभ, विरासत या बीमे से धन प्राप्ति के संकेत हैं।

आपकी संतान शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेगी, उन्हें परीक्षा में सफलता मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अगर वे सेवारत हैं तो औषधि और खाद्य सामग्री से संबंधित कार्यों में सफलता संभव है।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चपद, धन और सुख-सुविधाओं की प्राप्ति होगी। परामर्शदाताओं के आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। व्यापारी निवेश कर सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली पित्तविकार, थकान आदि संभव हैं। शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य गायत्री मंत्र का जाप करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - चन्द्र  
( 19/12/2030 - 20/07/2031 )**

आपके लिए मंगल की महादशा 19/07/2024 को प्रारंभ हुई और को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र अंतर्दशा 7 मास की होगी और 19/12/2030 को प्रारंभ होकर 20/07/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र माता, प्रसन्नता और मस्तिष्क के रुझान का कारक है।

इस अवधि में आप विदेश जा सकते हैं। खर्चे बढ़ेंगे। कल्याणकार्य में शरीक हो सकते हैं। शांत रहकर किये गये कार्य लाभकारी होंगे। व्यर्थ की चिंताओं और उत्तेजना से बचें। अध्यात्म में उन्नति हो सकती है। प्रतिस्पर्धियों पर विजय प्राप्त होगी। मातहतों से संबंध सुधरेंगे। जायदाद से किराये की आय में बढ़ोत्तरी होगी; किरायेदार सहयोग करेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा; सब सुख प्राप्त होंगे।

आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, वे सुविधासंपन्न होंगे। पिता को अचल संपत्ति से लाभ होगा या उसे क्रय कर सकते हैं। माता को संपन्नता, यात्रा, धार्मिक कार्य का संकेत है। भाई-बहनों को कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी; शिक्षा उत्तम होगी। आपकी संतान के जीवन में परिवर्तन हो सकते हैं; शिक्षा पूर्ण हो सकती है। अगर वे सेवारत हैं तो स्थानांतरण, साझेदार से लाभ, अप्रत्याशित आय का संकेत है।

अगर आप सेवारत हैं तो अनुबंधों से लाभ होगा; जनता से संपर्क बढ़ेगा। परामर्शदाताओं की लघु यात्राएं या मामूली परिवर्तन हो सकते हैं। व्यापारियों को कर्मचारियों द्वारा लाभ मिलेगा।

स्वास्थ्य का, खास तौर पर आंखों का ध्यान रखें। शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्र के मंत्र का जाप करें।

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

ॐ सों सोमाय नमः



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382